सुरः मुज़म्मिल के ख़ुसूसियात

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते है कि जो शख़्स सुरः मुज़म्मिल नमाज़े इशा में या आख़िर शब में पढ़े तो यह सूरः उसके नेक आमाल का शाहिद होगा और ख़ुदा के नज़दीक उसकी ग्वाही देगा और हक़ ताला उसे निहायत पाक पाकीज़ा ज़िन्दगी और अच्छी मौत से नवाज़ेगा और हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम इरशाद फ़रमाते है कि इस सूरः का पढ़ने वाला हर्गिज़ मुहताज न होगा, नीज़ मिस्बाहुल आब्दीन में वारिद है कि जो शख़्स ब नियत दफ़ा उसरत बाद नमाजे इशा इस सूरः को ग्यारह बार पढ़े तो उसे ख़ुशहाली नसीब हो।

सूरः मुज़म्मिल

सूरः मुज़म्मिल

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम
इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान
और निहायत रहम करने वाला है।

या अय्युहल मुज़म्मिल०
ऐ (मेरे) चादर लपेटने वाले (रसूल) रात
कुमिल लै-ल इल्ला कलीलन
को (नमाज़ के वास्ते) खड़े रहो मगर
निस्फ़-हु अविंकुस मिन्हु
(पूरी रात नही) बल्कि थोड़ी रात, आधी
कलीला० औ ज़िद अ़लैहि व
रात या इससे भी कम कर दो, या इससे
रत्तलिल क़ुरआ-न
कुछ बढ़ा दो और क़ुरान को बाकाइदा

सूरः मुज़म्मिल

तरतीला० इन्ना सनुल्क़ी
ठेहर ठेहर कर पढ़ा करो, हम अंकरीब़
अ़लै-क क़ौलन सक़ीला०
तुम पर एक भारी हुकम नाज़िल करेंगे,
इन-न नाशिअतल्लैलि हि-य
इसमें शक नहीं कि रात का उठना ख़ूब
अशद्दु वत्औं व अक़्व-मु
(नफ़्स का) पामाल कुन और बहुत ठिकाने
क़ीला० इन-न ल-क
ज़िक्र का वक़्त है, दिन को तो तुम्हारे
फ़िन्नहारि सब्हन तवीला०
और बहुत से बड़े बड़े अश्ग़ाल हैं तो तुम
वज़्कुरिस-म रब्बि-क व
अपने परवरदिगार के नाम को ज़िक्र करो
तबत्तल इलैहि तब्तीला०
और सबसे हट कर उसी के हो रहो, वही
रब्बुल मश्रिकि वल मग़्रिबि
मश्रिक़ और मग़्रिब का परवरदिगार है
ला इला-ह इल्ला हुव
उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो तुम

फ़त्तख़िज़्हु वकीला० वस्बिर
उसी को कारसाज़ बनाओ और जो कुछ
अ़ला मा यक़ूलू-न वह्जुर
लोग बका करते हैं उस पर सब्र करो
हुम हज्रन जमीला० व जनीं
और उनसे ब उंवाने शाइस्ता अलग
वल मुकज़्ज़िबी-न उलिन
थलग रहो, और मुझे उन झुठलाने वालों
नअ़मति व मह्हिल्हुम
से जो दौलतमंद हैं समझ लेने दो और
क़लीला० इन-न लदैना
उनको थोड़ी सी मुहलत दे दो, बेशक
अंकालौं व जहीमा० व
हमारे पास बेड़ियां भी हैं और जलाने
तआ़मन ज़ा गुस्सतिवं व
वाली आग भी, और गले फंसने वाला
अज़ाबन अलीमा० यौ·म
खाना (भी) और दुख देने वाला अज़ाब
तर्जुफ़ुल अर-जु वल जिबालु
(भी) जिस दिन ज़मीन और पहाड़

व का-न-तिल जिबालु
लरज़ने लगेंगे और पहाड़ रेत के टीले
कसीबम् महीला० इन-ना
जैसे भुरभुरे हो जायेंगे, (ऐ मक्का वालो)
अरसल्ना इलैकुम रसूलन०
हमने तुम्हारे पास (इसी तरह) एक रसूल
शाहिदन अ़लैकुम कमा
(मुहम्मद) को भेजा तो तुम्हारे मुआमला में
अर्सल्ना इला फ़िरअौ-न
ग्वाही दे जिस तरह फ़िरऔन के पास
रसूला० फ़असा फ़िर
एक रसूल (मूसा) को भेजा था, तो
औनुर्सू-ल फ़ अख़ाज़्नाहु
फ़िरऔन ने उस रसूल की ना फ़रमानी
अख़ज़ौं वबीला० फ़ कै-फ़
की तो हम ने (उसकी सज़ा) में उसको
तत-तकू-न इन क-फ़र्तुम
बहुत सख़्त पकड़ा, तो अगर तुम भी न
यौमैंय यज्अ़लुल विल्दा-न
मानोगे तो उस दिन (के अज़ाब) से कैसे

सूरः मुज़म्मिल

शीबान्निस्समाउ मुंफ़तिरुम
बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा, जिस
बिहि का-न वअ्दुहु
दिन आसमान फट पड़ेगा, यह उसका
मफ़्अूला० इन-न हाज़िहि
वादा है जो पूरा होकर रहेगा, बेशक यह
तज़्करतुन फ़मन
नसीहत है जो शख़्स चाहे अपने
शाअत-त-ख़-ज़ इला रब्बिहि
परवरदिगार की राह अख़्तियार करे, (ऐ
सबीला० इन-न रब्ब-क
रसूल) तुम्हारा परवरदिगार जानता है कि
यअ़ल-मु अन-न-क तक़ूमु
तुम और तुम्हारे साथ चंद लोग कभी दो
अद्ना मिन सुलुसयिल्लैलि
तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी
व निस्फ़हु व सुलुसहु व
रात और (कभी) तिहाई रात (नमाज़ में)
ताइफ़तुम्मिनल्लज़ी-न म-अ़क
खड़े रहते हो और ख़ुदा ही रात और

वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल
दिन का अच्छी तरह अंदाज़ा कर सकता
वन्नहार॰ अ़लि-म अल्लन
है उसे मालूम है कि तुम लोग इस पर
तुह्सूहु फ़-ता-ब अ़लैकुम
पूरी तरह हावी नहीं हो सकते तो उसने
फ़क़रऊ मा तयस्स-र मिनल
तुम पर मेहरबानी की जो जितना आसानी
क़ुरआनि। अ़लि-म अन
से हो सके उतना नमाज़ में क़ुरान पढ़
सयकूनु मिन्कुम मर्ज़ा व
लिया करो वह जानता है कि अंक़रीब
आख़रू-न यज़्रिबू-न फ़िल
तुम में से बाज़ बीमार हो जायेंगे और
अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन
बाज़ ख़ुदा के फ़ज़्ल की तलाश में रूऐ
फ़ज़्लिल्लाहि व आख़रू-न
ज़मीन पर सफ़र अख़्तियार करेंगे और
युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि
कुछ लोग ख़ुदा की राह में जिहाद करेंगे

सूरः मुज़्ज़म्मिल

फ़क़्रऊ मा तयस्स-र मिन्हु
तो जितना तुमसे आसानी से हो सके पढ़
व अक़ीमुस्सला-त व
लिया करो और नमाज़ पाबन्दी से पढ़
आतुज़्ज़का-त व अक़्रि
लिया करो और ज़कात देते रहो और
ज़ुल्ला-ह क़रज़न ह-सना॰
ख़ुदा को क़र्ज़े हसना दो और जो नेक
मा तुक़द्दिमू लि अंफ़ुसिकुम
अमल अपने वास्ते ख़ुदा के सामने पेश
मिन ख़ैरिन तजिदूहु
करोगे उसको ख़ुदा के यहां बेहतर और
इंदल्लाहि हु-व ख़ैरौं व
सिला में बुज़ुर्ग तर पाओगे और ख़ुदा से
अअ़्-ज़-म अजरा॰ वस्तग़्फ़ि
मग़फ़िरत की दुआ मांगो बेशक ख़ुदा बड़ा
रुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर
बख़्शने वाला मेहरबान है।
रहीम॰

☆☆☆☆☆